INDIRA GANDHI MEMORIAL HIGH SCHOOL

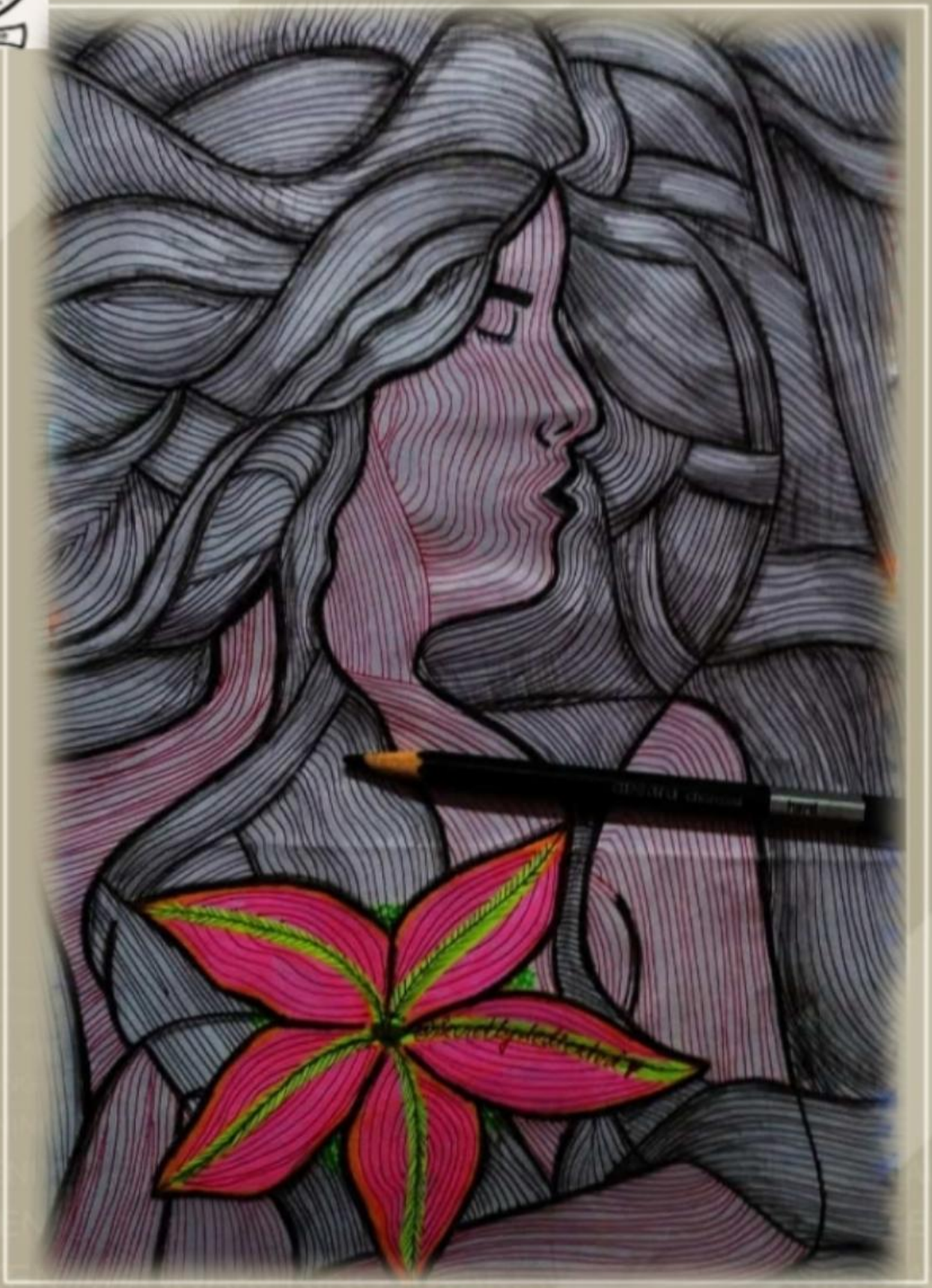

AWAKENING

लता मंगेशकर

स्वर कोकिला लता मंगेशकर भारत की ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया की सबसे मशहूर और अनमोल गायिका हैं, उन्होंने अपनी सुरीली आवाज का जादू न सिर्फ भारत में बल्कि विदेशों में भी चलाया है। लता मंगेशकर का जन्म 28 सितम्बर 1929 को मध्य प्रदेश के इंदौर में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री दीनानाथ मंगेशकर है जो कि एक मराठी संगीतकार, शास्त्रीय गायक, और थिएटर एक्टर थे। इनकी माता का नाम शेवन्ती देवी था। जो कि मूल रूप से गुजराती थी। लता मंगेशकर के अलावा इनके तीन बहनें और एक भाई है। जिनका नाम मीना खडीकर, आशा भोसले और उषा मंगेशकर है और भाई का नाम हृदय नाथ मंगेशकर है। लता मंगेशकर अपने पिता की सबसे बड़ी संतान थी। पंडित दीनानाथ का सरनेम हार्डीकर था। जिसे बदलकर उन्होनें अपना सरनेम मंगेशकर रख लिया था क्योंकि पंडित दीनानाथ जी गोवा में मंगेशी के रहने वाले थे जिस कारण उन्होनें अपना सरनेम बदल लिया था। लता जी के जन्म के समय इनका नाम हेमा था लेकिन पंडित दीनानाथ जी ने अपने नाटक "भावबंधन" में एक महिला किरदार जिसका नाम लतिका था उस नाम के कारण हेमा का नाम लता रखा। सन् 1942 में अचानक से पंडित दीनानाथ की मृत्यु हो गयी थी तब लता मंगेशकर की उम्र मात्र 13 वर्ष की थी और उनके ऊपर अपने परिवार की जिम्मेदारी आ गयी थी। जिम्मेदारी होने के कारण लता जी को अपने कैरियर की तलाश थी जिससे वह अपने घर की जिम्मेदारियों को पूरा कर सकें। जिसके लिए लता जी ने कुछ हिन्दी व मराठी फिल्मों में काम किया। लेकिन उन्हें अभिनय करना बिल्कुल पसंद नहीं था। अभिनेत्री के रूप में लता जी की पहली फिल्म "पाहिली मंगलागौर" रही जिसमें इन्होनें स्नेहप्रभा प्रधान के छोटी बहन के रूप में किरदार निभाया। इसके अलावा लता जी ने माझे बाल, चिमुकला संसार, गजभाऊ, बड़ी माँ माँद और छत्रपति शिवजी जैसी कई फिल्मों में काम किया। लेकिन सन 1948 में जब लता जी ने संगीत में कदम रखा तो उस समय नरजहां, अमीरबाई कर्नाटकी और शमशाद बेगम जैसी गायिकाओं ने अपनी अमिट छाप छोड़ रखी थी। जिसके कारण लता जी को संगीत के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाना बहुत ही ज्यादा मुश्किल था। लता जी ने अपना पहला गाना एक मराठी फिल्म के लिए गाया जो रिलीज नहीं हो पाई। पार्श्वगायिका के रूप में लता जी को पहचान दिलाने वाले इनके गुरू उस्ताद गुलाम हैदर थे। गुलाम हैदर जी ने इनको संगीत के क्षेत्र में एक अलग ही पहचान दिलाई क्योंकि लोगों का यह मानना था कि लता जी की आवाज बहुत पतली है और यह पार्श्वगायिका बनने के लायक नहीं है तब लता जी के गुरू गुलाम हैदर ने यह बात साबित करने का बीड़ा उठाया कि भविष्य में लता जी एक सफल और प्रसिद्ध पार्श्वगायिका बनेंगी और यह बात सिद्ध हो गयी। उस्ताद गुलाम हैदर ने कई निर्माता-निर्देशको से लता जी की मुलाकात करवाई लेकिन इसके बावजूद सफलता उनके हाथ नहीं लग पाई। तभी 1948 में गुलाम हैदर साहब ने एक फिल्म "मजबूर" में एक गाना गवाया जो कि "दिल मेरा तोड़ा" था। यह गाना लता जी की जिन्दगी का पहला हिट गाना था और इस प्रकार गुलाम हैदर साहब जी लता जी के गॉड फादर माने गये। इसके बाद 1949 फिल्म "महल" में एक गाना "आयेगा आने वाला" गाया जो कि सुपर डुपर हिट हुआ। इस गाने के बाद लता जी ने पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा। वैसे तो अगर कहा जायें तो लता जी ने हमेशा सदाबहार गाने गाए जिसको लोग आज भी सुनकर मनमोहित

हो जाते है। लता जी ने अपना पूरा जीवन गीत-संगीत को समर्पित कर दिया। उन्होनें लगभग 20 भाषाओं में 30,000 गानों को अपने सुरों से नवाजा जिसके लोग आज भी कायल है। लता जी की आवाज में वो ख़लिश है जो कभी बचपन की यादें, तो कभी आखों में आंसू और कभी सीमा पर खड़े जवानों में जोश भरने के लिए काफी है। लता जी को फिल्मों में पार्श्वगायिका के रूप में कभी भी नहीं भुलाया जा सकता है। अब हम आपको विभिन्न दशकों जिसमें लता जी के गायिकी का अहम योगदान रहा है उनके बारें में बतायेंगे। इन दशकों में लता जी ने कई संगीतकारों के साथ काम किया। अस्सी के दशक में शिवहरि, अनु मलिक, आनंद मिलिंद, जैसे संगीतकारों ने भी लता जी के साथ काम करना पसंद किया। नब्बे के दशक का उनका सबसे उल्लेखनीय काम दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे थे, जिसमें "मेरे ख्वाबों में जो आए", "हो गया है तुझको तो प्यार सजना", "तुझे देखा तो ये जना सनम" और "मेहंदी लगा के रखना" जैसे गाने थे। लता जी ने फिल्म वीर जारा (2004) में गाने के बाद गाने से संयास ले लिया। लता जी ने मधुबाला से माधुरी दीक्षित जैसी अभिनेत्रियों को अपनी आवाज दी। लता जी ने अपनी जिन्दगी में कभी भी शादी नहीं की क्योंकि छोटी सी उम्र में जिम्मेदारियां आने के कारण दुनियादारी में इतनी उलझ गयी कि उन्होनें कभी शादी के बारें में नहीं सोचा। लता जी ने अपनी जिन्दगी में कई सारे पुरस्कारों को जीता और साथ ही कई सम्मान भी प्राप्त हुए। लता मंगेशकर ने न केवल कई गीतकारो एवं संगीतकारों को सफल बनाया है, बल्कि उनके सुरीले गायन कारण ही कई फिल्में लोकप्रिय सिद्ध हुई है। लता मंगेशकर जी को अपने करियर में कई बहुत से बड़े और राष्ट्रीय सम्मान भी प्राप्त कर चुकी हैं, जिनमें भारत के सर्वोच्च पुरस्कारों में शामिल पद्मश्री और भारत रत्न भी शुमार है। इसके अलावा लता जी को गायन के लिए 1958, 1960, 1965,एवं 1969 में फिल्म फेयर अवॉर्ड भी प्राप्त हुए हैं। 'गिनीज बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकार्ड्स' की तरफ से भी उनका विशेष सम्मान किया जा चुका है। मध्यप्रदेश शासन की तरफ से उनके नाम हर साल 1 लाख रूपये का पारितोषिक दिया जाता है। 1989 में लताजी को 'दादा साहब फालके पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 1974 में, वह लंदन, यूके में रॉयल अल्बर्ट हॉल में प्रदर्शन करने वाली पहली भारतीय पार्श्व गायिकाओं में से एक थीं। लता जी ने हमेशा अपनी शर्तों पर ही गीतों को गाया। उनका मानना था कि रिकार्डिंग की पेमेण्ट के बाद भी जब तक वह रिकार्ड बिक रहा है। उसकी कमाई का एक छोटा सा हिस्सा गायक को भी आना चाहिए। जबकि हर प्रोड्यूसर इसके खिलाफ थे। जिस समय देश का मनोबल नीचे था तब देश को एक ऐसे ही जज्बे की तलाश थी जो कश्मीर से कन्याकुमारी और कच्छ से रण को एक कर सके और साथ ही आसमान में तिरंगे को लहराता देख कर गर्व महसूस कर सके। ऐसे में राष्ट्र कवि प्रदीप जी ने ये शब्द "ऐ मेरे वतन के लोगों, जरा आँख में भर लो पानी, जो शहीद हुए है उनकी, जरा याद करो कुर्बानी" इन शब्दों को लता जी ने अपनी आवाज दी थी जिससे यह गाना सदा सदा के लिए अमर हो गया। इस गीत को लता जी ने पहली बार 27 जनवरी, 1963 को दिल्ली के नेशनल स्टेडियम में गाया था। 8 जनवरी 2022 को, लता मंगेशकर ने हल्के लक्षणों के साथ कोविड -19 के लिए सकारात्मक परीक्षण किया और उन्हें मुंबई में ब्रीच कैंडी अस्पताल की गहन देखभाल इकाई में भर्ती कराया गया। वह अपने स्वास्थ्य में "मामूली सुधार" के संकेतों के साथ आईसीयू में बनी रही। उनका इलाज करने वाले डॉक्टरों ने 28 जनवरी को उनके स्वास्थ्य में "मामूली सुधार" के बाद उन्हें वेंटिलेटर से हटा दिया था, हालांकि, वह 5 फरवरी को वेंटिलेटर पर वापस आ गई थीं, जब उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया था, और "आक्रामक चिकित्सा" से गुजर रहे थे। लता जी की मृत्यु 6 फरवरी 2022 को 92 वर्ष की आयु में मल्टीपल ऑर्गन डिसफंक्शन सिंड्रोम से हुई थी। उनका निमोनिया और कोविड-19 का लगातार 28 दिनों तक इलाज चला था। फरवरी 2022 में, बाइंडर इंडियन कल्चरल सेंटर द्वारा प्रायोजित टाइम्स स्क्वायर, मैनहट्टन में एक इलेक्ट्रॉनिक बिलबोर्ड में मंगेशकर को श्रद्धांजलि दी गई थी। 10 फरवरी 2022 को, मंगेशकर की अस्थियों को उनकी बहन आशा भोंसले और भतीजे आदिनाथ मंगेशकर द्वारा रामकुंड, नासिक में गोदावरी नदी में विसर्जित किया गया था।

-- अस्मिता रॉय

XI साइअन्स - अ

'Nationalism'

Nationalism is defined as 'identification with one's own nation and support for its interests, especially to the exclusion or detriment of the interests of other nations', more distinctly to love one's nation, to take pride in your nation and to stand with your nation! Nationalism is even present in children's drawing books, children wanting to be Subhash Chandra Bose, Gandhiji or A.P.J Kalam during fancy dress competitions, history books which holds everything about our past, gives us sense of patriotism, when we stand during our national anthem, our heart beat rises, making us proud that our generation is privileged enough to stand together under one roof and loudly sing the national anthem. It also includes showing our gratitude and extreme respect to our freedom fighters. This is the beautiful part of nationalism. Nationalism is the feeling, all of us Indians share and it never belongs to one particular religion, caste or a state.

But the scenario of nationalism transformed massively in the past years, from taking pride in being Indian and upholding fraternity, it started associating with religion and the spectrum you belong in politics and you know it, when nationalism merges with religion and politics, it invites unrepairable damage. It is no surprise that the majority of Indians practice Hinduism and probably, most of our freedom fighters belonged to the same religious community but this shouldn't approve the idea of disregarding people devoting to other religious communities or being on the marginalized sections. Unfortunately, its not the case. To be specific, the evident religious intolerance started after the 'Pulwama incident', where we lost 40 Indian soldiers and even before that, the hatred against marginal religious communities (particularly Islam) was hiding and after the attack, the so-called fraternity, equality and tolerance were withdrawn. The current Government undoubtedly promotes Hinduism but during its term, it not only showed its favoritism towards the religion but also, showed its prejudice towards the Muslim community. Hindu extremists, in the name of religion carry out rallies and efforts are constantly being made in the promotion of Hindutva and voicing one's love for the nation and intense hatred for our neighboring country, Pakistan. The fact, we consider being 'Pakistani' or being 'Muslim' as an insult, shows our bigotry. The religiosity has taken a deep toll on our people that we feel converting India into Single-religion country, will prove our love for this nation, to destruct Masjids or considering other religions inferior compared to Hinduism will make us 'true Indians' but it is a delusion. This country which is known for its rich culture and diversity is now openly harassing the outvoted and anyone who speaks against it, becomes a traitor. Extremists are not holding back even after seeing the horrible situation and how it is affecting the minorities, them being helpless and terrified because of the on-going discrimination doesn't change anything. How exactly are you honoring your religion by tormenting the marginalized communities, by perceiving your religion greater than others and by dominating a whole nation? How is that included in your moral hood? We are so blinded by religion and regard it so essential that we are not hesitating to hurt our people, who are also Indians.

You might respond, "Muslims in other countries also torture Indians and we're excusing them?" When will it occur to us, not all Muslims intend to hurt Hindus and playing fire with fire, isn't righteous, to hurt Muslims because they've hurt Hindus, isn't justified because most of them are innocents and were also referring to youngsters, who in no way should be the victims of the harassment. The government has never showed its interest towards the protection of the oppressed and in fact never showed interest in anything, which seems 'irrelevant' to them. The irony is, media supports the government and loads of privileged associations hesitates to go against them. This essay probably focuses on how we are secluding certain sections of people from being part of the feeling of nationalism but I also want to highlight, how our government has overlooked significant issues regarding Economy, Women's protection, on-going poverty, corruption faced by the mass, flawed education system, unaffordable healthcare, exploitation of low wage earners, oppression on farmers and still, the list doesn't end.

When the current political party acceded the government, it received a lot of popularity and the expectations of our nation rose because for the first time in years, we thought a true Indian, with Indian values and who is aware of India's economic situation and the corrupted mass, will be representing our nation and at first, it felt like that. It really impressed all of us by putting their reforms into action and the urge to abolish all sorts of hypocrisy shown by the past governments, excited us. Unfortunately, the contrary happened. The government, we thought had the necessary virtues to transform our country into a better and a more progressed nation, actually has no such intentions. It has been rather obsessed with insignificant issues and has been promising us a fake change, when they have the power to do something actually. At first, they portrayed themselves as unbiased and against meritocracy but now, it constantly shows its obvious favoritism towards certain issues. There is no objection as such with the government being concerned with certain affairs but we are referring to negligence and uninterested characteristics shown towards other important matters, which makes us question their morality. It is massively evident, how the government is obsessed with religion and takes actions sooner, when it involves about their beliefs and other than that, they clearly overlook other problems. The depressing part is, it has been spreading its agenda of 'Hindu extremism' massively and it is initiating a negative impact on our people. Involving religion into politics and to belittle those, who aren't supporting these acts, isn't ethical. Probably this essay won't be appreciated but I want us to be aware of the wrong doings and the state of our country right now. We all have been upholding nationalism and we still continue to honor our dead soldiers and ancestors for giving us this beautiful sense of freedom but are we really free? Are we really trusting the right government? Is this the nation we wanted all this time?

Oishi Banik

11 ARTS

All I wish is for an eternal afternoon

When the Sun begins tilting to the West
I run to my terrace, to embrace the golden orange rays about to leave Earth for today.
I sit there silently, and think.
I dive into an ocean of thoughts.
So deep, slowly, the green potted plants in front me, disappear.
I see vividly, what I think.
Thoughts lit in the dying sunshine.
Cringey memories of the past light up to life.
What if moments become almost real scenarios.
Then thoughts lead on to thoughts.
Then situations lead to imaginary ones.
Suddenly I am thrown on the shore of reality, from the ocean of thoughts.
The neighbors' kids are playing on their terrace, filled with energy and joy.
I shift my gaze to the flying kites, and birds.
The wind has started to blow.
The Sun is dead, the sunlight stays on as zombies for some time.
The thoughts were so beautiful, I remember.
The imaginary scenarios were so beautiful.
Then I think again.
The past stands as a solid road,
The present, as one, under construction,
And the future?
It's just leaves no one has trodden on!
Earthly calls of family members bring me down from heaven of imagination.
I'm once again a human being, a real one!

By
Rejoy Dey
Class 12 Sc A
Roll 73

Images by: Sukriti Roy Class-8B

Aliens - Is it a myth or a truth?

Aliens, is a popular word for **extraterrestrial** life-form or a life that doesn't originate from Earth. The Aliens are from the Sci-Fi realm. None of us know the existence of Aliens. But, some of the scientists believe it is not possible whereas some think they are real.

UFO (unidentified flying object):

Some people consider ***UFO*** as the transport vehicle or spacecraft of Aliens. Reported sightings of UFOs have increased in recent years and some parts of the country have proven to be particularly hospitable to strange things in the sky -- or at least to those who see them.

UFO sighting or Something else??

Who created the Universe? The almighty or something else?

However in the books of religion of different countries chariot of God with glittering rays descended to the earth from unknown outer space, to render scientific and technical knowledge to the humans and went back to some unknown places called ***"heavens"***. Is it not queer that the space rockets have been described as ***"chariots"*** and took their places in the primitive folk tales.

How could one explain that a stone weighing about 20000 tons and marked with peculiar inscriptions on it has been discovered in ***"Peru"***? What was the cause of destruction of ancient ***"Maya Civilisation"***? In the very old days how could man made such talented work without the help of others? Are the UFO's real?

Are all these the myth? Now a days our scientists are trying to go to outer spaces, even to the ***"Mars"***. Why are they serious to know about the interplanetary objects? The future will give us the answer.

Created By-
Depangshu Banerjee
VII – A - 05

The myths and the truths about Aliens and Extra-terrestrial life:

In the famous book ***"Decent of Man"*** Charles Darwin discussed the differences of man with the animals. He stated that man is superior because of their powers of reasoning, memory and language. He admitted that much qualities of man are derived from the animals, at ***"stazes"*** and through the process of ***"natural evolution"***. The specialities of man came from the use of arms, their intelligence and the movement with the help of their two legs.

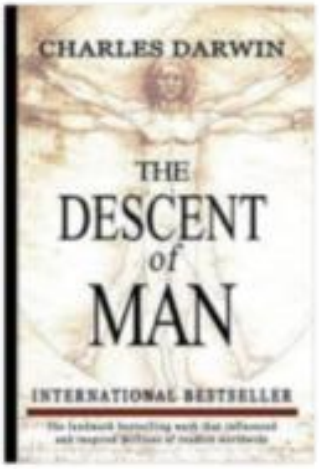

The Decent Of Man by Charles Darwin

The anthropologist are however still doubtful about how and when the man learned to start erect. Wherefrom they got the knowledge of making arms and to use those arms against their enemies. Who actually was the forefather of man? Was it the ***"God"*** that created the universe from a void and then the man? Discovery of ***"Neanderthal"*** alone, cannot give the proper answer.

সত্যজিৎ ও আমরা

রবীন্দ্রনাথ একবার একটি ছোট মেয়েকে চিঠিতে লিখেছিলেন যে হিমালয়ের মতো বিশাল বস্তুকে দেখতে হলে তার বুকে চড়ে কিছুই বোঝা যায় না। যতটুকু নাগালের মধ্যে দেখা যায়, ততটুকুই বোঝা যায়। কিন্তু হিমালয় থেকে খানিকটা দূরে সরে গেলেই নগাধিরাজের আসল স্বরূপ উন্মোচিত হয়। ঠিক এমনটাই ঘটে কোনো মহান ব্যাক্তিত্বের বেলায়, তাঁদের যথাযথ যুক্তিযুক্ত মূল্যায়ন করতে হলে ওই মানুষের দূরত্বের সুস্থ পরিবেশটা দরকার। সেই ব্যাক্তিত্বের মোহময় স্বকীয়তার আভাসটুকু পরিমাণ মতো পাওয়া যায়। কার কথা বলছি, সেটা আর নতুন করে বলার অপেক্ষা রাখে না। সত্যজিৎ রায় কত বড় মাপের পরিচালক, সাহিত্যিক, চিত্রশিল্পী, সুরকার ইত্যাদি নিয়ে বহুদিন ধরে শব্দ আর পৃষ্ঠা খরচ হয়েই আসছে,আজও হচ্ছে, ভবিষ্যতেও হবে। আজকের দিনে বরং একটু অন্য চোখে 'মহারাজা' কে দেখলে ক্ষতি নেই কারন, বাঙালী জাতি নিজের গুণ আর 'বেগুন' - উভয় দিয়েই সত্যজিৎকে আঁকড়ে ধরে রেখেছে।সবাই জানে বাঙালীরা উৎসব প্রেমী, রায়সাহেবের জন্মদিনটাও উৎসব বইকী কম কিছু না, আর উৎসব মানেই তো আমরা বুঝি পুজো। ঠিক যেমন রবীন্দ্রনাথ কেও প্রকৃত অর্থে আমরা 'ঠাকুর' বানিয়ে ফেলেছি, ঠিক তেমনই সত্যজিৎ রায় ও একটা 'ব্র্যান্ড', -এ রূপান্তরিত হয়েছে। মানুষ সত্যজিৎ -এর চিন্তা- ভাবনা, শিল্প বোধ, মনস্তত্ত্ব, দর্শন,বিজ্ঞান,রাজনিতী নিয়ে আলোচনা করে লাভটা কি? সেই তো দিনের শেষে 'পথের পাঁচালী'-র মোহে ডুবে গিয়ে তার অতুলনীয়তার তুকিরসে পৃষ্ঠার পর পৃষ্ঠা ভেজাবো আর সকাল থেকে বার সাতেক "আহা কি আনন্দ আকাশে বাতাসে" গাইতে গাইতে কোমর দোলাব। ব্যাস আমি রায়বাবুর-এর ফ্যান বু-ও-ও-ও-য়/গেরা-আ-আ-আ-ল হয়ে গেছি। এটাই আমরা, এভাবেই আমরা উদযাপন করতে ভালোবাসি। কারণ যতই আমরা মুখের সামনে 'ব্রেক দ্য স্টিরিওটাইপ' মনভাব দেখাই না কেন, নতুন কিছুকে একসেপ্ট করতে আজও আমাদের ফাটে, হ্যাঁ আর আমরাই বাঙালী।

প্রথমেই যে বিষয়টা আলোচনার দাবা রাখে সেটা হলো মানিকবাবুর সিনেমায় 'নারীবাদ'। যে সময়ে "পথের পাঁচালী" মুক্তি পাচ্ছে, সেই ১৯৫৫ সালে কিন্তু ইতিমধ্যেই উত্তম-সুচিত্রার "অগ্নিপরীক্ষা" বাঙালী মননে রোম্যান্টিকতার নতুন নির্যাস তৈরী করে দিয়েছে। সিনেমা মানেই একজন সুন্দরী নায়িকা আর নায়িকা মানেই অতি অবশ্যই একজন পুরুষের প্রেমিকা, অভিনেত্রী আর নায়িকা এ ক্ষেত্রে ভিন্নার্থক হিসেবেই গণ্য করা শ্রেয়। আর প্রতিটি গল্পের শেষটাই "মধুরেন সমাপয়েৎ"। এখানেই আসল তাসটা খেললেন মানিক। দুর্গা, সর্ব জয়া আর ইন্দির ঠাকরুন। ইন্দির-এর মৃত্যুর সাথে সাথেই তাঁর একমাত্র সম্বল শূন্য ঘটি টার পুকুরে গড়িয়ে যাওয়া, হরিহরের দীর্ঘদিনের অনুপস্থিতিতে সর্বজয়ার জীবন সংগ্রাম, বৃষ্টির ধারায় তালের সাথে সাথে দুর্গার শরীরের এক একটা ভঙ্গিমার মূর্ছনা যেন সিনেমায় নারীদের দেখার একটা স্বাতন্ত্র্য দৃষ্টিকোণ গড়ে দিল সত্যজিৎ।

Swarnadeep Roy

'দেবী'-তে মাদ্ধাতা যুগীয় কুসংস্কার, অন্ধবিশ্বাসের ভিক্টিম হিসেবে এক নারীকে দেখালেন মানিক, যেটা আদতে বহুকাল ধরে চলমান এক রীতিতে,যাকে বলা যেতে পারে religious dogmatism-এ আঘাত হানল অচিরেই। বহু সাধু সন্ন্যাসী সহ সঙ্ঘের লোকেরা দাবি করল, মানিক নাকি হিন্দু ধর্মকে অপমান করেছেন। "backward,unsophisticated audience" বলে তাদের মন্তব্যকে ফুৎকারে উড়িয়ে দিলেন মানিক। "সমাপ্তি"-তে 'মৃন্ময়ী'-র মধ্যে দিয়ে দেখালেন এক নারীর কৈশোর থেকে যৌবনের জাগরণ,প্রকৃতির চঞ্চলতা থেকে

প্রেমের শান্ত সৌন্দর্যে উত্তরণ। নায়িকা মানেই যে নায়কের প্রেমিকা, সেই মূলস্রোতে চলতে থাকা সংজ্ঞা থেকে ধীরে ধীরে বের করে আনতে লাগলেন দর্শককে।

চিরাচরিত সম্পর্কের বেড়া ভেঙে এক অন্যধরনের বিবাহ বহির্ভূত সম্পর্কের টানাপোড়েনে বেঁধে ফেললেন "চারুলতা"-র চারু আর "ঘরে বাইরে"-র বিমলাকে। ধীরে ধীরে নারীর চিন্তা-ভাবনার মুক্তপ্রকাশ ঘটতে থাকল সত্যজিতের রুপালি পর্দার দুনিয়ায়।"প্রতিদ্বন্দ্বী"-র তপু হোক বা "মহানগর"-এর আরতি : এক স্মার্ট , উচ্চাকাঙ্খী চাকুরিজিবী,পরিবারের দায়িত্ব সামলানো ওয়ারকিং উওম্যানের পোর্ট্রেট তখনকার সময়ের তুলনায় অনেকটাই এগিয়ে ছিল, আর এখানেই মানিকের নৈতিক জয়।

সত্যজিতের সিনেমায় 'যৌনতা'- এক বিশেষ জায়গা দখল করে রেখেছে নিঃসন্দেহে। কি ভাবছেন? এ বাবাগো। এই 'মহাদেব' তুল্য মানুষটার সাথে কি না কি শব্দ যোগ করছে... যৌ-ন-তা। তৌবা- তৌবা- তৌবা। আজ্ঞে হ্যাঁ, ঠিক এই কারণেই সত্যজিৎ এক কারস্টিন অ্যান্ডারসনকে বলেছিলেন,"ভারতের মতো দেশে স্বাধীন ভাবে ন্যুডিটি তো দূর, যৌন দৃশ্যও দেখানো সম্ভব নয়।" "অরণ্যের দিনরাত্রি"-তেই আসুন না। হরির কাছে নারী শুধুমাত্র শরীর, সেই মেয়ে কখনও শহরের প্রাক্তন প্রেমিকা,কখনও অরণ্যের 'দুলি'। সত্যজিতের কল্পনা, ক্যামেরা, ভাবনা খেলা করতে থাকে দুলির শরীরের গতিময়তার খাঁজে খাঁজে। দুলির যৌনতা এ ছবিতে আদিম ও আরণ্যক যা জাগিয়ে তোলে হরির আদিম রিপু। জঙ্গলে হরি আর দুলির আদিম রসাত্মক মিলন দৃশ্যের মাধ্যমেই এক অন্তর্লীন সৌন্দর্য সৃষ্টি করলেন সত্যজিৎ, যেটা আদতে এক অপাপবিদ্ধ সেক্স-অপিল। "পিকু" সিনেমায় এক বিবাহ বহির্ভূত সম্পর্কের যৌন দৃশ্য দেখানো নিয়ে এক ফরাসি পত্রিকার সাক্ষাৎকারে সত্যজিৎ বলেছিলেন,"One statement film tries to make is that of a woman is to be unfaithful if she is to have an extramarital affair .She can't afford to have soft emotions towards her children or in this case her son....they just don't go together."

আজকের বাংলা তথা ভারতের এই টাল মাতাল সময়ে মৃত্যুর ৩০ বছর পরেও বাঙালী নতুন করে খুঁজে পেয়েছে সত্যজিৎ-কে। তোটের রাজ্যে বিজেপির মতো ফ্যাসিস্ট শক্তির হুঙ্কার মনে করাচ্ছে "হীরক রাজার দেশে"-তে সেই স্বৈরাচারী শাসকের মন্ত্র," যায় যদি যাক প্রাণ, হীরকের রাজা ভগবান"। সারা রাজ্য জুড়ে হানাহানি,রক্তপাত প্রতি মুহূর্তে আমাদের মনে করিয়েছে,"মিথ্যে অস্ত্র শস্ত্র ধরে/ প্রাণটা কেন যায় বেঘোরে"? এরকম অস্থির সময়েই তো সাধারণ যুক্তিবাদী মানুষদের মনে পড়ার কথা "গণশত্রু"-কে।কি ভাবে ধর্মকে অস্ত্র করে মানুষের বিশ্বাস নিয়ে ছিনিমিনি খেলা যায় তা বহু আগেই দেখিয়ে গেছিলেন সত্যজিৎ। ভোটের ফলাফলের দিনেই দেখে নেওয়া যাবে "ষড়যন্ত্রী মশাই"-দের আচ্ছে দিনের শেষ প্রহরের পালা। আমরা স্বপ্ন দেখি 'মহারাজ', একটা নতুন দিনের, একটা নতুন যুগের, যার ভাগিদার হব আমরা, হ্যাঁ তুমিও হবে। যে দিন অতিমারী হেরে যাবে, একটা নতুন যুগের সূচনা করতে নেমে যাব আমরা, চারিদিকে ধ্বনিত হবে, " আহা কি আনন্দ আকাশে বাতাসে..."।

By

Debritra Sarkar

XI (Arts)

বিক্রম বাত্রা

পরম বীর চক্রে সম্মানিত বাস্তব জীবন সুপারহিরো, বিক্রম বত্রার অমর বীরত্বের কাহিনী কারুর অজানা নয়; তবে প্রতিমুহূর্তে সেই কাহিনীকে অনুভব করতে আপত্তি কোথায়? আমাদের জীবন দিয়েই তো সে নিজের প্রাণের বলি ভারতমাতার পায়ে সমর্পিত করেছিলেন! "জীবন লম্বা নয়, বড়ো হওয়া উচিত", ওনার এই বিখ্যাত বক্তব্যের মতোই উনি আমাদের শিখিয়েছেন ভবিষ্যতের অহেতুক চিন্তা করে বৃথা সময় নষ্ট না করে বাস্তবে বাঁচতে। আমাদের গর্বিত বীর সৈনিকদের অন্যতম সেরা সেনা নায়ক, বিক্রম বত্রা, যিনি ১৯৯৯ সালে ভারত-পাকিস্তান কার্গিল যুদ্ধে ভারতের বিজয়ী হওয়াতে এক অতি গুরুত্বপূর্ণ ভূমিকা পালন করেছিলেন। এই যুদ্ধের সবচেয়ে দক্ষ সেনানায়েকের একজন ছিলেন অমর ক্যাপ্টেন বত্রা।

ভারতবর্ষের সব বীর সন্তানের একজন সেরা ছিলেন তিনি।

এই যাত্রা অনেক বছরের, এর শুরু মাত্র ২৪ বছর বয়সে আমরণ দেশের সেবার উদ্দেশ্যে , ১৩ J&K রাইফেলস-এ তার যোগদান।তিনি লেফট্যানেন্ট কর্নেল পদে নিযুক্ত হয়ে যোগদান করে এই যাত্রা শুরু করেন। কিছু মেষপালক শ্রেণীর লোক প্রথম লক্ষ্য করেন কিছু মাওবাদীদের, ৩ মে সেনাবাহিনীকে খবর দেন। ৫ মে এই মাওবাদী দলের বিষয়ে তথ্য সংগ্রহ করতে ৫ জনের ব্যাটালিয়ন পাঠানো হয়, কদিন পর তাদের নিষ্প্রাণ দেহ ফিরে আসে সেনার কাছে। আগেই কোনো অনিষ্টের আঁচ পাওয়া গেছিল, অনেকক্ষণ রেডিও বার্তা না আসাতে, শেষপর্যন্ত তাদের সন্দেহ ঠিক বলেই প্রমান হয়।৯ মে; ইতিমধ্যে পাকিস্তানি বাহিনী কার্গিল-এ ভারতীয় গোলাবারুদ বাঁধে যথেষ্ট ক্ষতি সাধন করেছে। ১০-ই মে, গুপ্তচর এবং বাহিনীদের তদন্ত মারফৎ কাশ্মীর ও জম্মু-র বিভিন্ন জায়গায় মাওবাদী উপস্থিতির প্রমান পাওয়া যায়। পুরো দেশ থেকে বিপুল পরিমাণে সেনা কার্গিল সেক্টরে ডেকে আনা হয়। কিছু দিনের মধ্যেই পাকিস্তানি সেনার এই ভয়াবহ পরিস্থিতিতে হস্তক্ষেপ প্রমান হয়ে যায়। অবশেষে ৬ জুন, ১৯৯৯ ভারতীয় সেনা "অপারেশন বিজয়" নামে যুদ্ধ ঘোষণা করে। ১৩ J&K রাইফেলস ওই দিনই দ্রাস সেক্টরে পৌঁছায়, রাজ রাইফেলস-এর দ্বিতীয় ব্যাটালিয়ন এর আক্রমণের সময়ের সংরক্ষিত বাহিনী হিসেবে কাজ করার আদেশ দেওয়া হয়। কমান্ডার যোশী ৫১৪০ কে পুনরুদ্ধারের পরিকল্পনা শুরু করেন। বিস্তারিত তথ্য সংগ্রহের পর জানা যায় সামনে থেকে আক্রমণের চেয়ে পূর্ব দিক থেকে আক্রমণ তুলনামূলক সহজ হবে। কমান্ডার; লেফট্যানেন্ট সঞ্জীব সিংহ জাম্ওয়াল অধীনস্থ ব্রাভো কোম্পানি এবং লেফট্যানেন্ট বাত্রার ডেল্টা কোম্পানির সহায়তায় এই পয়েন্ট পুনরুদ্ধারের পরিকল্পণা করেন। লেফট্যানেন্ট জামওয়ালকে নাম দেওয়া হয়, "সংগ্রাম" এবং লেফট্যানেন্ট বাত্রাকে নাম দেওয়া হয়, "শেরশাহ"। ব্রাভো কোম্পানি পূর্ব দিক থেকে এবং ডেল্টা কোম্পানি দক্ষিণ দিক থেকে শত্রু অধীনস্থ দেশের ভাগে প্রবেশ করে। পরিকল্পণা অনুযায়ী দুই দল রাতে ০৩.১৬ সময় গন্তব্য স্থলে পৌঁছায়। ০৩.৩৫ বাজতেই সংগ্রামের বিজয় বার্তা রেডিও মারফৎ বেস ক্যাম্পে পৌঁছায়।

অন্যদিকে শেরশাহ শত্রুদের আচমকা আক্রমণের পরিকল্পনা করে পিছন পথে পাহাড়ে প্রবেশ করে শত্রুদের পালাবার রাস্তা আটকে দেন। বীর বাত্রা গুরুতর জখম-সহ অন্যান্য সেনাদের যুদ্ধ চালিয়ে যাওয়ার আদেশ দেন। পয়েন্ট ৫১৪০ আয়ত্তে আনা পর্যন্ত দলকে নেতৃত্ব করেন বাত্রা। ০৪.৩৫ র সময় তিনি "ইয়ে দিল মাঙে মোর" বলে তার বিজয় সংকেত ঘোষণা করেন। দুই দলই অকথ্য অবস্থায় ফিরে আসে। এই জয়ের পর লেফটেন্যান্ট বাত্রাকে ক্যাপ্টেন পদে পদন্নত করা হয়। গুমরিতে খানিক বিশ্রামের পর ৩০-এ জুন মুষকহ উপত্যকায় পাঠানো হয় দলকে। দ্রাস ও মাতায়ান এর ৩০-৪০ কিমি বৃহৎ রাস্তা শত্রু দলের নজরে থাকায়

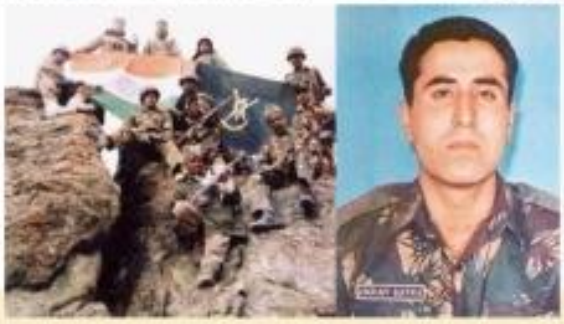

বাহিনী দলকে পয়েন্ট ৪৫৭৫ মুষকোহ পুনরুদ্ধারের আদেশ দেওয়া হয়। ফ্ল্যাট টপ এরিয়াতে ভীষণ লড়াই করার পর শত্রুর পাল্টা আক্রমণে ক্যাপ্টেন নাগাপ্পা-র দুই পা গুরুতর আহত হওয়ার ফলে তিনি যুদ্ধক্ষেত্রে জ্ঞান হারান। পরিস্থিতির দুরবস্থা দেখে ক্যাপ্টেন বাত্রা তার ডেল্টা কোম্পানির ২৫ জন বাহিনী নিয়ে অগ্রসর হন সামাল দিতে। মধ্যরাত্রে ক্যাপ্টেন বাত্রা যাত্রা শুরু করেন, রেডিও মারফৎ খবর পৌঁছায় তার আগ্রাসনের, শুনে ওখানে উপস্থিত সেনারা মনবল পায়ে। তাদের জানানো হয় যে শেরশাহ পৌঁছানো পর্যন্ত তাদের সামাল দিতে হবে, শুনে আনন্দে আত্মহারা হয়ে পড়ে উপস্থিত সেনা। সকাল ৬-৭ সময় দুই সেনা, নিজেদের অত্যন্ত কাছে চলে এসেছিল, এতটাই যে তারা একেওপরের কথা শুনতে পাচ্ছিলো। এই সময়ে শত্রুদের ধূলিস্যাৎ করাই ছিল এক মাত্র লক্ষ্য। প্রতিকূলতার শিখরে থাকা, বাত্রা, কুয়াশাচ্ছন্ন আবহাওয়ার কারণে সঠিক ভাবে তখনও কিছু লক্ষ্য করা যাচ্ছিল না। পাহাড় বেয়ে ওঠার সময় বাত্রা লক্ষ্য করেন যে একটি শত্রু মেশিন গান পাহাড়ের খাঁজে আটকে পড়া ভারতীয় সৈনিকদের উদ্দেশ্যে ক্রমাগত গুলির বর্ষা করে যাচ্ছে।বাত্রার ওদিকে উদ্দেশ্য করে গ্রেনেড আক্রমণের পরে তার আর কোনো অস্তিত্ব থাকে না। সকালের মধ্যে আরো দুটো শত্রু মেশিন গান আমাদের সেনা নষ্ট করে দিয়েছিল। সকাল হতেই বাত্রা দেখতে পায়ে যে শত্রু মেশিন গান তাদের তাক করে রেখেছে। তিনি বুঝতে পারেন সামনে থেকে আক্রমণ-ই একমাত্র উপায়। তিনি বিরাট ঝুঁকি জানা সত্ত্বেও, কোনো পরোয়া না করে "দুর্গা মাতা কি জয়" বলে এগিয়ে যান শত্রুদের ধ্বংস করার উদ্দেশ্যে এবং ৫ জন শত্রু সৈনকে হত্যা করেন। চোখের পলকে ৭ জন শত্রুদের শব ফেলে ভারতীয় সেনার একটু হলেও পরিস্থিতির প্রতিকূলতা কমে। কিন্তু আরো ৪ জন সেনা তখনও উপস্থিত ছিলেন সেখানে। বাত্রা তাদের ওপর ঝাঁপিয়ে পড়ে তাদের হত্যা করেন।তিনি নিজের আহত সেনাদের বাঁচিয়ে নিজে শত্রুদের সামনে সম্মুখীন হন। দুর্ভাগ্য এই দেশের যে আর বেশিখন এই বীর সন্তানের জীবনের সময় ছিল না। খুবই কাছ থেকে একটা গুলি তার মাথায় বিঁধে যায়। বাত্রা এক অবর্ণনীয় বীরের মত ভীষণ যুদ্ধ লড়াই করে, তার আহত সৈনিকদের পাশে তার নিষ্প্রাণ দেহে লুটিয়ে পড়ে। ৭-ই জুলাই ১৯৯৯ এ এক ভারতীয় বীর সৈনিক শেরশাহ-র শেষ নিশ্বাস পড়ে কার্গিল-এর মাটিতে। এই দেশের উদ্দেশ্যে নিক্ষিপ্ত গুলি নিজের বুকে নিয়ে তিনি তার অমর দেশপ্রেম প্রমান করে মৃত্যু বরণ করেন। তিনি তার অপ্রতিশিম বীরত্বের জন্য ভারতের বীরদের সবচেয়ে মর্যাদাপূর্ণ "পরম বীর চক্র" সম্মানে সম্মানিত হন। শেরশাহ-র বীরত্বের এই কাহিনী ভারতীয়দের মনে সদা অমর থাকবে।

Masterpedia

VIKRAM BATRA

September 9, 1974 To July 7, 1999
Kargil War 1999

Diyasini Sinha
XI Sc A

Translated by- Debyashis De

मैं

मैं वो सुर जो उनके गानों में बहती थी,
मैं वो सुर जो उनके साँसों में बसती थी।
मैं वो सुर जो उनको खूब लुभाती थी,
मैं वो सुर जो उनको हर दिल में पहुंचती थी।

मैं वो पल जिससे वो डटकर सामना करती थी,
मैं वो पल जिससे वो खूब लड़ती थी।
मैं वो पल जब वो आसमान छूना चाहती थी,
और मैं वो पल जो सारे जहाँ में छाना चाहती थी।

मैं वो हसी जो उनके चेहरे में झलकती थी,
स्वर कोकिला स्वयं सरस्वती की बेटी थी।
आओ सब मिलकर दे उन्हें श्रद्धांजलि,
यू ही गीतों के ज़रिये आती रहे हमारे दिल की गली।।

-नबजुकता दास
xi साइंस अ

-: তোকে ভোলা যায় নারে বন্ধু :-

আবছা আলোয় যখন সূর্য মিশে থাকে,
তোর কথা তখন ভীষণ মনে পড়ে,
দেখি আকাশটা গোধূলিবর্ণা হয়ে সিঁদুরে রাঙা আবির ছড়ায় মেঘে মেঘে,
লালচে সন্ধ্যা গুটিগুটি পায়ে আস্তে আস্তে এগিয়ে আসে তখন
এক মায়াবী আলোর খেলায় ভেসে যায় মেঘেরা..
পাখিরাও তখন ফিরে যায় নীড়ে,
তাদের না বলা গল্প বলে
দূরের ওই বটগাছটা বয়সের ভার নিয়ে দাঁড়িয়ে থাকে..
জানিস একটা কথা আমি গভীরভাবে উপলব্ধি করেছি,
যখন অন্ধকার আকাশের দিকে তাকিয়ে চেয়ে দেখি জানালার শিক ধরে,
তখন ছোট্ট ছোট্ট অনেক তারা মিটমিট করে জ্বলে উঠে আমাকে কিছু ইঙ্গিত করে
বুঝলাম কিছুদিন পর যে ওরাও চায় তোর-আমার বন্ধুত্ব হোক নতুন করে,
তাহলে বল, এই দিগন্তছোঁয়া অন্ধকার আকাশে নামার আগে,
ভাঙাবি না আমাদের মান-অভিমানের গন্ডি??

-দীপবালা দাস (XII Arts)

"The Book"

The book means enlightenment in the mind,
Preventing the darkness breaking through the wind.

The Book means that there is
Memory of getting back love,
The Book means magnificent knowledge,
Around the Globe to be served.

The book means if you search,
In to the deep sea of knowledge,
You will find the pearls, Diamonds and precious gems.

The Book is also my best friend,
The power of my deep emotion;
The hope of my ultimate satisfaction.

That is why there is so much devotion,
And love of mine.

-- Rajarshi Dey --

Class - IX (B), Roll No. 11

QUIZ TIME

1. What's the biggest animal in the world?
2. For one point put the following Kardashian-Jenners in order of age,oldest to youngest-Khloe,Kylie,Rob,Kourtney,kendall,kim and Kris
3. How many times has Andy Murray won Wimbledon playing singles?
4. Which country is brie cheese originally from?
5. In what franchisewould you find the character Katniss Everdeen?
6. What year was Heinz established?
7. At the time of wrting(May 2020),who is fifth in line to the British Throne?
8. Who came second in FIFA WOMEN's WORLD CUP in 2019?
9. What year did Margaret Thacher die?

BONUS QUESTIONs-

1)What does IPA stand for?

2)Which movie won an Oscar for best animated feature in 2001?

Mail your answers to us at our mail id- english.editors21@gmail.com

WALT DISNEY

Walt Disney has always been the favorite of children and adults. The Walt Disney Company was founded on 16th of October 1923 by Walt Disney and Roy O. Disney. It is an American multinational entertainment and media conglomerate headquartered at the Walt Disney Studios complex in Burbank, California, U.S.

Walt Disney or Walter Elias Disney was an American entrepreneur, animator, voice actor, film producer and a writer who was born on 5th December 1901. He did a great job in the animation industry and introduced us to several developments in the world of animation. He introduced us to the famous cartoon character- Mickey Mouse. He died on 15th December 1966 due to Lung Cancer.

The mission of The Walt Disney is to entertain and inspire children and adults around the world through various interesting films and movies and stories.

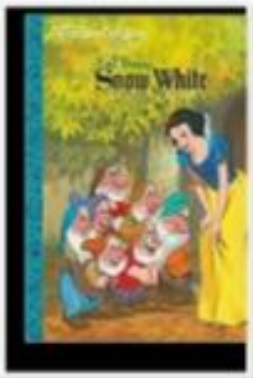

DO YOU KNOW?

Disney's Steamboat Willie was the first animated work with synchronized sound along with picture.

Snow White and the Seven Dwarfs was the first animated full length movie.

Some of the Famous Creations of Walt Disney of all times are:-

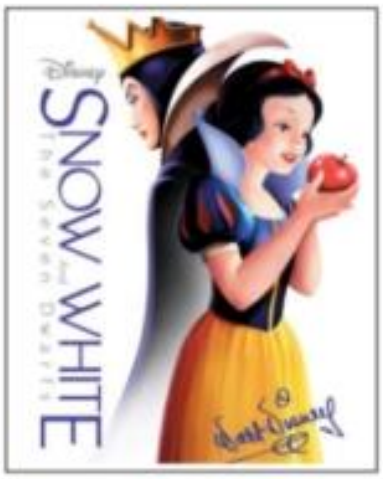

Snow White and the Seven Dwarfs was the first full length animated film released on 10th February, 1965. The story is about Snow White, a princess exiled by her stepmother, an evil queen who wants to kill her and then she runs into a forest. Soon in the forest, she is rescued by seven dwarfs who form a friendship with her. This story is famous among all. It received the 'Academy Honorary Award' in 1939. It also received many other awards.

This 1999 fictional adventurous movie is about Tarzan, an orphan raised by mountain gorillas. Tarzan later rescues a woman explorer, Jane. After realizing that he himself was a human, Tarzan must choose between the urban civilized and jungle life. The movie Tarzan received the 'Kids' Choice Awards for Favorite Voice from an Animated Movie' award.

Tangled, Cinderella, Pinocchio, Beauty and the Beast, Frozen and Dumbo are some of the popular creations of The Walt Disney Company.

There are many other popular Disney movies.

Pirates of Caribbean is a series of fantasy swashbuckler films produced by Jerry Bruckheimer films and based on Walt Disney's theme park attraction of the same name. This series has total 5 films. The total budget of this series is $1.274- $1.364 billion. Johnny Depp played the role of Captain Jack in this fantasy series and Keira Knightley was seen playing the role of Elizabeth and Orlando Bloom played the role of Will Turner. Geoffrey Rush played the role of Hector Barbossa.

DISNEY RECENTLY RELEASED A NEW MOVIE 'ENCANTO' ON 26TH OF NOVEMBER, 2021.

THE STORY- The Madrigals are an extraordinary family who live hidden in the mountains of Colombia in a charmed place called the Encanto. The magic of the Encanto has blessed every child in the family with a unique gift -- every child except Mirabel. However, she soon may be the Madrigals last hope when she discovers that the magic surrounding the Encanto is now in danger.

Actress Stephanie Beatriz played the voice of the main character Mirabel.

According to reports, this movie costs around $150 million to make but it gained only $40.3 million till now.

DID YOU KNOW?

Disney world's magic kingdom earned a Guinness World Record in the year 2018 for the most visited theme park with 20,859,000 visitors that year.

Cinderella castle at Disney world holds the world record as the tallest theme-park palace.

Tirtharaj Das
Class- VII
Section-A
Roll number- 13

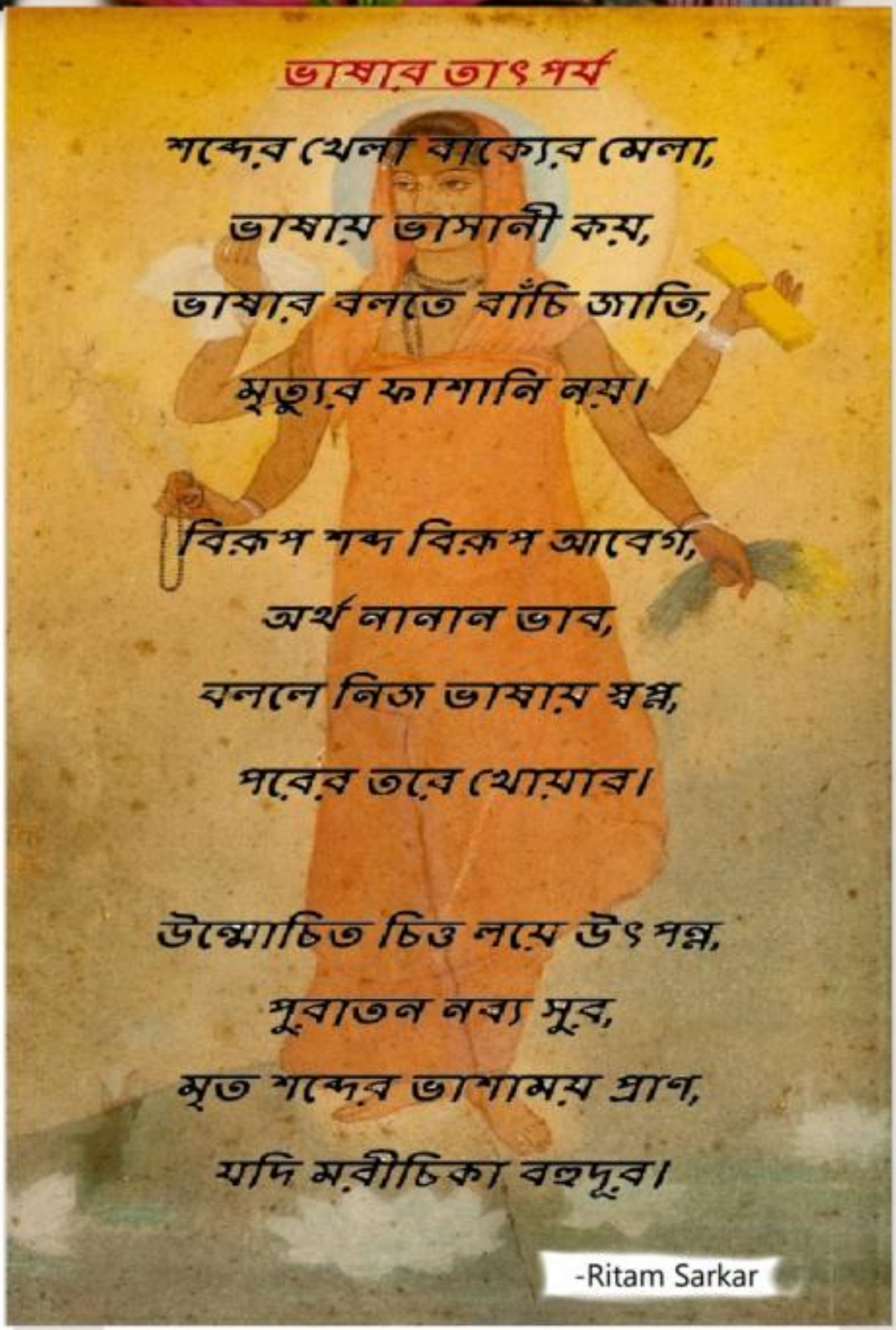

ভাষার তাৎপর্য

শব্দের খেলা বাক্যের মেলা,
ভাষায় ভাসানী কয়,
ভাষার বলতে বাঁচি জাতি,
মৃত্যুর ফাশানি নয়।

বিরূপ শব্দ বিরূপ আবেগ,
অর্থ নানান ভাব,
বললে নিজ ভাষায় স্বপ্ন,
পরের তরে খোয়াব।

উন্মোচিত চিত্ত লয়ে উৎপন্ন,
পুরাতন নব্য সুর,
মৃত শব্দের ভাশাময় প্রাণ,
যদি মরীচিকা বহুদূর।

-Ritam Sarkar

The story of Indian Mummy

Not all mummies are found in Egypt neither all mummies are wrapped around bandages. In Himachal Pradesh approximately 1000 feet high, there is a particular mummy which is more than 500 years old and is naturally preserved mummy which has been preserved without any artificial ways.

In the year 1975 at Spiti Valley a damaged tomb was discovered after an earthquake and something unbelievable was found in that. A village named as Gue which is the home of perhaps India's naturally preserved mummy, this mummy is **LAMA SANGHA TENZIN**.

SANGHA TENZIN is a Buddhist monk. It is believed that he died in 15th century when he was 45 years old, generally dead bodies are preserved using several methods like 'embalming'. (Embalming is a process of introducing a disinfectant solution to the internal environment of the body when someone passes away, usually a embalmed body lasts for two more weeks)

It is believe that **SANGHA TENZIN** mummified himself , but how does someone mummify themselves?..... So, in order to find out the answer , we need to understand the tradition of self mummification practice of Japan. A practice called Sokushinbutsu was used from 11th to 19th century. It's followers consider it as a path of enlightment. This process was aim to maintain the body in such a condition that it remains well- preserved even after death. This process lasted for several years and it included various thing. So what was the process? the process of Sokushinbutsu was followed to reduce fat in the body, they followed a special diet . A tree based diet that mostly consisted of things like nuts, seeds and berries. Foods such as rice, wheat and any other which adds fat to the body had to be quit, because more the fat would mean to fast decay of body. It is believed that a poisonous tea made from Urushi tree was also consumed in this process, vomiting after its consumption resulted in the removal of fluids from the body and the poison in the body repelled insects, maggots and bacteria . Another purpose of this process was to reduce the size of body organs which in turn make it difficult to decompose.

It is believed that the monks of Japan in their final day lock themselves in the tomb. This tomb had an air tube, they also had a bell which they would ring it everyday to alert the outside people that they are alive and the day the bell stops ringing they were believed to be dead. Then that tomb was sealed. After around 1000 days of their death. The tomb was opened to check if their bodies are mummified or not, but not everyone succeeded in this process. A very few self mummification were found , mostly in Japan. After 19th century this process was declared illegal in Japan.

So did **SANGHA TENZIN** use this process too?

We can't be fully sure about this but one team tried to investigate this. Few years ago a Professor of University of Pennsylvania, Professor Victor Mair went to Gue with his team to test this mummy. They found high levels of residual nitrogen in **SANGHA TENZIN**'s body which according to them indicated long fasting or minimal eating. There are chances that **SANGHA TENZIN** followed Sokushinbutsu practice

and also the air of Spiti Valley and cold climate helped in mummification. This mummy is not in reclining or sleeping position but is sitting in yogic position and **SANGHA TENZIN**'s neck has a meditation belt which help him in meditation. Even after so many years, **SANGHA TENZIN'**s teeth are properly visible, his hair and nails are also well preserved.

But why did **SANGHA TENZIN** did this?

According to popular folklore, his village succumbed to plague of scorpions. In order to save the village, **SANGHA TENZIN** decided to mummify himself. It is believed that when Tenzin's soul left his body, a rainbow appeared in the sky and the village was freed from scorpions forever. Legend says the mummy is alive and hence became known as "living Buddha". Legend claims that the hair and nails are still growing. **SANGHA TENZIN** is now respected and worshipped in the Gue village. Some local people worship the mummy as a "living God".India is famous for its history and fascinating folklore. **SANGHA TENZIN** and his mummy in the Himalayas is the another example of this.

Ananya Sikder

Class-X A

संन्यासी की दया भावना

स्वामी दयानंद गिरी एक ब्राह्मण संत थे। वे प्राय: कहा करते थे की जो व्यक्ति गरीबों वा असहायों से प्रेम करता है , भगवान उसे अपनी कृपा का अधिकारी बना देता हैं। स्वामीजी विरक्ता की साक्षात मूर्ति थे। चौबीस घंटे में एक बार किसी घर से भिक्षा प्राप्त करते थे। देश समय साधना वा लोगों को सदाचार का उपदेश देने में लगाते। एक बार किसी मजदूर ने उन्हें नंगे पांव विचरण करते देखकर कपड़े के जूते भेंट किए। उन्होंने उस निश्छल भक्त के जूते खुशी खुशी स्वीकार कर लिए कुछ वर्ष बाद उनका एक भक्त नए जूते लेकर आया तथा प्रार्थना की कि पुराने जूते उतारकर उसके ले जूते पहन लें। स्वामीजी ने जवाब दिया, 'इन जूते में मुझे गरीब मजदूर के प्रेम की झलक दिखाई देती है। मैं इन्हें तब तक पहनता रहूंगा, जब तक ये पूरी तरह फट ना एक बार उनके भक्त शिवरात्रि पर भंडारा कर रहे थे। स्वामीजी प्रवचन में कह रहे थे कि वही सत्कर्म सफल होता है, जिसमे गरीबों के खून-पसीने की कमाई लगती है। अचानक उन्होंने देखा कि दरवाजे पर कुछ लोग एक वृद्धा को हाथ पकड़कर बाहर निकल रहे हैं। स्वामीजी ने कहा, ' माई को आदर सहित यहां लाओ।' वृद्धा आई तथा बोली , ' महाराज, मेरे ये दो रुपए भंडारे में लगवा दे। ये लोग नही ले रहे हैं।' स्वामीजी ने भक्त को पास बुलाया और बोले, ' इन दो रुपए का नमक मंगवाकर भंडारे में लगवा दो। खून - पसीने की ईमानदारी की कमाई के नामक से भंडारा भगवान का प्रसाद बन जायेगा।'

स्नेहा सिन्हा

XI SC अ

EVENTS AT CAMPUS

Republic day celebration

GAB FEST CLASS VIII

STORY TELLING COMPETITION CLASS IX

Canvas

Tirtharaj Das
Class-7-A, Roll number-13

Moumi Ghosh
XI Arts

Ananghsha Mitra
VIII-B

FEW WORDS BEFORE WE END

We appreciate the contribution done in
each and every creative skill,
in form of Literature and Art.
Keep enriching us with literary and Artistic skills.
Mail your opinion.
We will try to make it more innovative.

The Editorial Team

Arkaprabha
Asmita
Ayushman
Diyasini
Shreyan
Tuhinangshu
Utkarsha
Krishnendu
Deep
Kankana
Shreyasi
Pratyush
Shovan Das Gupta

The Art Team

Sneha
Shreya
Ahir
Agnibho
Pratyush

KEEP SHARING 😊😊